खेमा एवं उप्पलवण्णा

(भगवान बुद्ध की अग्रश्राविकाएं)

विपश्यना विशोधन विन्यास

(भगवान बुद्ध की अग्रश्राविकाएं)

खेमा

एवं

उप्पलवण्णा

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी

****

भगवान बुद्ध की उद्घोषणा

****

“एतदग्गं, भिक्खवे, मम साविकानं भिक्खुनीनं -

महापञ्ञानं यदिदं खेमा।

इद्धिमन्तीनं यदिदं उप्पलवण्णा।”

****

“भिक्षुओ, मेरी भिक्षुणी-श्राविकाओं में ये अग्र हैं -

महाप्रज्ञावतियों में अग्र खेमा।

ऋद्धिमतियों में अग्र उप्पलवण्णा।”

– *अङ्गुत्तरनिकाय (१.१.२३६-२३७)*

भगवान बुद्ध की अग्रश्राविकाएं

खेमा एवं उप्पलवण्णा

विषयानुक्रमणिका

प्रकाशकीय [vii]

खेमा १

खेमा और बिम्बिसार १
मगध राजघराने की धर्म-चेतना २
बिम्बिसार की युक्ति २
धर्मसंवेग जागा ५
महाप्रज्ञावती खेमा ६
खेमा-पसेनदि संवाद ७
खेमा की बुद्धवंदना ९
लाभ-सत्कार से दूर १२
जातक कथा १३
डय्हमानो न जानाति १३
अतीत कथा १८
भगवान दीपंकर की भविष्यवाणी १८
पदुमुत्तर बुद्ध से गौतम बुद्ध का शासनकाल . . . १८

उप्पलवण्णा २०

यथा-नाम-तथा-गुण २०
बुरे काम का बुरा नतीजा २१
क्षीणास्रव काम-सुख के परे २२
विनय-नियम २३
ऋद्धिमती उप्पलवण्णा २३
उप्पलवण्णा ने सबको प्रव्रजित किया २४

अनुकरणीय आदर्श २५
उप्पलवण्णा के उद्गार २५
अतीत कथा २६
भगवान दीपंकर की भविष्यवाणी. २६
भगवान पदुमुत्तर एवं विपस्सी का शासनकाल . . . २६
भगवान गौतम बुद्ध का शासनकाल २७

प्रकाशकीय

भगवान बुद्ध की वाणी से अभिसिंचित तिपिटक – भगवान के महाश्रावकों, महाश्राविकाओं, उपासकों, उपासिकाओं के प्रेरणादायी प्रसंगों से ओत-प्रोत है। भगवान ने इनमें से कई पात्रों को उनके विशेष गुणों की वजह से उन्हें अग्र की उपाधि प्रदान की तथा उनके गुणों को अपने आचरण में उतारने के लिए परिषद को प्रेरित किया। प्रस्तुत पुस्तिका भिक्षुणी खेमा एवं उप्पलवण्णा के जीवन प्रसंगों पर आधारित है।

सागल की राजकुमारी खेमा अपूर्व सुंदरी थी। मगध सम्राट बिम्बिसार से विवाह होने पर उसे अग्र राजमहिषी का पद मिला। उसे अपने रूप-सौंदर्य पर बहुत गर्व था। इस कारण वह भगवान बुद्ध के संपर्क में आने से कतराती रही क्योंकि वे रूप में दोष देखते थे।

बिम्बिसार को भगवान की विपश्यना विद्या से अपूर्व शांति मिली थी। अतः वह चाहता था कि खेमा-सहित उसके समस्त प्रिय परिवार को भी यह शांति-प्रदायिनी विद्या मिले। परंतु वह यह भी जानता था कि खेमा को भगवान के प्रति घोर वितृष्णा है।

बिम्बिसार ने एक युक्ति से महारानी खेमा को वेळुवन उद्यान भिजवाया। भगवान ने धर्ममय ऋद्धिबल से खेमा के अंदर व्याप्त इस काया के प्रति तादात्म्य भाव, चिपकाव, आसक्ति से मुक्त होने का संवेग जगाया। खेमा को एहसास हुआ कि काम-मोह में डूबी रहने के कारण वह अपने ही हित-सुख से इतने दिनों तक वंचित रही।

खेमा ने भगवान के शासन में प्रव्रजित होकर अरहंत अवस्था प्राप्त की। वह लोकसेवा में लग गयी। प्रज्ञा के क्षेत्र में प्रखर होने के कारण धर्म सिखाने के काम में अत्यंत प्रभावशाली हुई। भगवान ने अपनी भिक्षुणी-श्राविकाओं में खेमा को महाप्रज्ञावतियों में अग्र की उपाधि दी।

एक अवसर पर खेमा ने महाराज पसेनदि (प्रसेनजित) के साथ हुए संवाद में अपनी प्रखर प्रज्ञा का परिचय दिया।